REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

संसद से सड़क तक : कविताओं में व्यंग्य

डॉ.भरत आर. बोदर
अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
नवजीवन आर्टस एन्ड कोमर्स कोलेज, दाहोद (गुजरात)

✻ सारांश :

सृष्टि के प्रारंभ से ही मनुष्य अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करता आया है। जब उसे कष्ट, पीड़ा या दुःख होता है, तो वह रोता है, शोक प्रकट करता है कि जब उसे खुशी या प्रसन्नता होती है, तो वह हँसता है। उसका हँसना और रोना अपने सुख और दुःख को प्रकट करना है। इस प्रकार की अभिव्यक्ति वह तब से करता आ रहा है, जब उसे पढ़ना-लिखना नहीं आता था। शिक्षित होने पर मनुष्य ने अपनी विभिन्न अनुभूतियों को लिखित रुप में ढाला है, जिससे अलग-अलग साहित्यिक विद्याओं का निर्माण हुआ।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में व्यंग्य प्रायः अंग्रेजी शब्द 'सटायर' से प्रभावित है। 'संस्कृत-हिन्दी शब्द कोश' में 'व्यंग' और 'व्यंग्य' दो शब्दों का अर्थ अलग-अलग दिया है - 'वि + अंग = विगतं वा अष्ठा स्य' अर्थात देशहीन, अंगहीन, विरुप, विकलांग, अपाहिज, मेढ़क तथा गाल पर पड़े काले धब्बे आदि। 'व्यंग्य' शब्द की व्युत्पत्ति 'वि + अञ्ज = ण्यत्' अर्थात 'अञ्ज' धातु में 'वि' उपसर्ग और 'ण्यत्' प्रत्यय से माना गया है, जिसका अर्थ है - व्यंजना शक्ति द्वारा ध्वनित।''[१] ''नालंदा विशाल शब्द सागर में 'व्यंग्य' शब्द का अर्थ व्यंजनावृत्ति के द्वारा प्रकट होने वाला गूढ़ अर्थ, ताना, चुटकी और बोली इत्यादि बताये गए है।''[२] अतः व्यंग्य को ''तथा-कथित व्यंजना व्यापार का विकसित और विशिष्ट रुप ही कहा जा सकता है। धृणा और विसंगति को आधुनिक व्यंग्य की जननी कहकर उसे एक नये संदर्भ में जोड़ा गया है। आधुनिक व्यंग्य इस रुप में ध्वनि से अलग है। व्यंग्य में ध्वनि का प्रत्येक रुप प्राप्त होता है, परंतु प्रत्येक ध्वनि में व्यंग्य की संभावना खोजना कठिन है। अतः 'व्यंग' की अपेक्षा 'व्यंग्य' शब्द का प्रयोग 'सटायर' के लिए सर्वाधिक उपयुक्त ज्ञात होता है।''[३]

यहाँ भारतीय विचारकों एवं व्यंग्यकारों के कुछ विचारों को देखा जा सकता है -

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदीजी ने व्यंग्य को अत्यंत छोटी पर गम्भीर परिभाषा देते हुए लिखा है - ''व्यंग्य वह है, जहाँ कहनेवाला अधरोष्ठों में हँस रहा हो और सुननेवाला तिलमिला रहा हो।''[४]

लतीफ धोधी व्यंग्य में आक्रमकता को नकारते हैं और हँसते-हँसते विसंगतियों को व्यक्त करने के पक्षधर है- ''मैं यह मानकर चलता हूँ कि मेरी व्यंग्य रचनाओं में आक्रमकता नहीं है, तिलमिलाहट पैदा करनेवाली स्थितियाँ नहीं है। दरअसल आक्रमकता को मैं व्यंग्य के लिए और जरुरी मानता हूँ। व्यंग्य किसी मीठे धुलनशील रैपर में लपेटकर आपको दिया जाये तो आप हँसते हुए विगल लेंगे। जो स्वना आपके मुँह का स्वाद बिगाड़ दे उसे मैं सफल स्वना मानने को तैयार नहीं हूँ।''[५]

इसके विपरीत हिन्दी के मूर्धन्य व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई व्यंग्य हँसाए- यह एकदम गैर जरुरी मानते है - ''व्यंग्य व्यापक जीवनपरिवेश को समझने से आता है, मिथ्याचार, असामंजस्य, अन्याय आदि की तह में जाना, कारणों का विश्लेषण करना, उसे सही परिप्रेक्ष्य में देखना-इससे सही व्यंग्य बनता है जरुरी नहीं है कि व्यंग्य में हँसी आये। यदि व्यंग्य-चेतना को झकझोर देता है, विद्रूप को सामने खड़ा कर देता है, आत्मसाक्षात्कार करता है और परिवर्तन की ओर प्रेरित करता है, तो वह सफल व्यंग्य है।''[६]

साहित्य-समीक्षकों एवं व्यंग्यकारों के मंतव्यों से यह स्पष्ट हो जाता है कि ''व्यंग्य तिलमिला देने वाली अभिव्यक्ति एक लक्षण जरुर है, परंतु इसका अर्थ यह भी नहीं लगा देना चाहिए कि व्यंग्य एक निर्मम विद्या है। बल्कि करूणा की एक लुप्त धारा उसमें सर्वत्र प्रवाहित रहती है जो रचना के अन्त में जाकर पूर्ण परिपाक को पहुँचती है। प्रायः व्यंग्यकारों के व्यंग्य का उत्स किसी-न-किसी गहन करूणा स्त्रोत में ही छिपा होता है। करूणा के कारणों पर व्यंग्य की चोट और पात्र या स्थिति के प्रति गहन मानवीय संवेदना ही सार्थक व्यंग्य की सृष्टि करते हैं।''[७] अतः व्यंग्य समाज की विद्रूपताओं से ही उत्पन्न वह रचना है जो स्थितियों की आलोचना कर, उनका पर्दाफाश करती है।

स्वतंत्रता के बाद विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश में मोहभंग प्रारंभ हुआ। लोकतंत्र के संविधान में कथित मौलिक अधिकार आदर्श बनकर रह गये थे, क्रियान्वयन होता नहीं दिख रहा था। मूल्यहीनता की आँधी ने देश को राजनीतिक, नैतिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक स्तर पर काफो नीचे गिराया। भ्रष्टाचार ने शासन और जनता के बीच गहरी खाई खोदी। इस प्रकार विसंगतियों के धरातल पर व्यंग्य के नये-नये आयाम उभरने लगे। आधुनिक हिन्दी-साहित्य के इने-गिने व्यंग्य-कवियों में स्व.सुदामा प्रसाद पाण्डेय 'धूमिल' का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जा सकता है।

धूमिल रचित 'संसद से सड़क तक' कविता संग्रह का कथ्य-संसार बहुत व्यापक है। सामाजिक यथार्थ से जुड़े सभी कथ्य-बिन्दु संकलित कविताओं में कहे गये हैं। जिनमें रोटी है, मकान है, आज की औरत है, बेरोजगारी है, बढ़ती जनसंख्या और उसका संकट है, चुनाव है, नेता है और आतंकवाद है।

धूमिल ने अपनी कविताओं में लोकतंत्र के संविधान वाणी स्वातंत्र्य अधिकार का प्रयोग कर, नेताओं, मंत्रिओं और संसद से कुछ ऐसे सवाल किए है, जिनका सीधा सम्बन्ध साधारण जनता की अत्यंत विकट समस्याओं से था। 'रोटी और ससद कविता में कवि ने रोटी की समस्या पर करारा व्यंग्य कसा है जो हमें झकझोर देता है। कविता का कलेवर बहुत छोटा है, परंतु कवि के समग्र काव्य-चिंतन का बीज रुप है -

''एक आदमी

रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है
वह सिफ, रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूँ
'यह तीसरा आदमी कौन है ?'
मेरे देश की संसद मौन है''[८]

स्वतंत्रता के बाद देश की आर्थिक स्थिति में सुधार अवश्य हुआ, किन्तु उसका लाभ जन-साधारण तक पहुँच नहीं सका। इसीलिए कवि द्वारा किए गए प्रश्नों का उत्तर देने में हमारे देश की संसद मौन है, निरूत्तर है।

'अकाल-दर्शन' कविता में कवि भूख के उद्‌गम-स्त्रोत को खोजते है और एक जिम्मेदार आदमी से प्रश्न करता है - 'भूख कौन उपजाता है ?' यह आदमी चालाक है, संकेतात्मक उत्तर देता है -

''उस चालक आदमी ने मेरे प्रश्न का उत्तर
नहीं दिया।
उसने गलियों और सड़कों और घरों में
बाढ़ की तरह फले हुए बच्चों की और इशारा किया
और हँसने लगा।''[९]

भूख का वर्णन घूमिल की अनेक कविताओं में मिलता है। सभी जगह उनके भूख विषयक-विचारों का आधार एक है। वे 'पटकथा' कविता में लिखते है।

''सुनो
आज मैं तुम्हें वह सत्य बतलाता हूँ
जिसक आगे हर सच्चाई
छोटी है। इस दुनिया में
भूखे आदमी का सबसे बड़ा तर्क
रोटी है।''[१०]

आजादी के बीस-पच्चीस साल बाद भी हमारे देश की संसद आम-आदमी को रोटी, कपडा और मकान की सुविधा उपलब्ध कराने में असमर्थ रहती है, तब घूमिल 'बीस साल बाद' कविता में अपने आप से प्रश्न करता है -

''बीस साल बाद
मैं अपने आप से सवाल करता हूँ
जानवर बनने के लिए कितने सब्र की जरुरत होती है ?
और बीना किसी उत्तर के चूपचाप
आगे बढ़ जाता हूँ।''[११]

भूख एक ऐसी समस्या है, जिसके लिए एक मात्र सरकार जिम्मेदार है, परंतु नेता इस स्वीकारते नहीं है। इसका सारा दोष ये बढ़ती हुई जनसंख्या पर डालकर स्वयं निर्दोष छूट जाते है। बढ़ती जनसंख्या का कारण भी वे जानते है -

''बच्चे तो बेकारी के दिनों की उपज है
इससे वे भी सहमत है।''[१२]

बढ़ती जनसंख्या क कारण जनता की अज्ञानता है। इस अज्ञानता को दूर करने के लिए 'प्रौढ-शिक्षा' का आयोजन हुआ। परंतु प्रौढ़ी में, खास करके देहातों की स्थिति में कोई सुधार नहीं आया। 'प्रौढ़-शिक्षा' कविता में संसद की तरफदारी करनेवाले सत्ताधारियों पर व्यंग्य कसे है -

''मगर तुम्हारे लिए कहा गया हर वाक्य
एक धोखा है जो तुम्हें दलदल की ओर
ले जाता है।''[१३]

भ्रष्ट नेताओं और सत्ताधिकारी अपनी दिमागी चालाकी से देहात के गँवार, अनपढ़, निरीह और भोली-भाँति जनता को छलते है। कवि सत्ता की दिमागी चालाकी को समझ गया है, इसीलिए जनता को सावधान करते है -

''तुम अनपढ़ थे
गँवार थे
सीधे इतने की बस
दो और दो चार थे।''[१४]

किसी भी देश की व्यवस्था उस देश के शासकों के हाथ में होती है, उसमें बदलाव लाना उनका काम है। लेकिन जन-साधारण की समस्याओं को सुलझाने में सत्तालोलुप स्वार्थपरक नेताओं को कोई रुचि नहीं है। संसद में बैठे सभी पार्टियों के सत्तालोलुप नेताओं को बेनकाब करते हुए 'पटकथा' कविता में तीखे व्यंग्य किये ह -

''मैंने उब और गुस्से को
गलत मुहरों के नीचे से गुजरते हुए देखा

मैंने अहिंसा को
एक सत्तारुढ़ शब्द का गला काटते हुए देखा
मैंन इमानदारी को अपनी चोरजेबें
भरते हुए देखा
मैंने विवेक को
चापलूसी के तलवे चाटते हुए देखा...।''[१५]

घूमिल ने वर्गविहीन, संवेदनशून्य समाजवाद पर भी तीखे व्यंग्य किए है। घूमिल की कविताओं में समाजवाद आर्थिक-नीतियों से प्रभावित तथा शोषक-पूँजीपतियों के अपरिमित लाभ और शोषितों के अकल्पिय शोषण के रुप में प्रकट हुआ है। हमारे देश में समाजवाद के नाम पर जो आर्थिक-नीतियाँ तैयार की जाती है वह जमींदारों और पूँजीपतियों के पक्ष में एवं गरीबों के विरुध्ध होती है। फलतः अमीर-गरीब की खाई बढ़ती जाती है। आर्थिक विषमता के परिणाम स्वरुप उत्पन्न विसंगतियों पर तीखे व्यंग्य 'पटकथा' कविता में व्यक्त हुए है -

''मगर मैं जानता हूँ कि मेरे देश का समाजवाद
मालगोदाम में लटकती हुई
उन बाल्टियों की तरह है जिस पर 'आग' लिखा है
और उनमें बालू और पानी भरा है।''[१६]

घूमिल की व्यंग्य-दृष्टि कोई एक वर्ग तक सीमित नहीं है। उन्होंने देहात का समाज, कस्बा और शहरी समाज को स्पर्श करने वाली विरूपताओं-जाति-भेद, भाषा-भेद, यौनाचार आदि उनके व्यंग्य के निशाने पर रहे है। शहरी समाज अपने आपको सभ्य एवं बुध्धिजीवी समझता है, किन्तु वह मानवीय भावना खो चुका है, उसमें आत्मीयता का अभाव है। उसके सारे रिस्ते गौण हो गए है। 'मोचीराम' कविता में शहरी समाज की हृदयहीनता, स्वार्थपरकता पर बडे निममता से कविने व्यंग्य किए है।

''और बाबूजी असल बात तो यह है कि जिन्दा रहने के पीछे
अगर सही तर्क नहों है
तो रामनामी बेचकर या रण्डियों की
दलाली करके रोजी कमाने में
कोई फर्क नहीं।''[१७]

शहरी एवं ग्रामीण सभ्यता में आई काम-विषयक उदारता और क्रूरता पर व्यंग्य करते हुए कविने 'एकान्त कथा' कविता में लिखा है -

''बलात्कार के बाद की आत्मीयता
मुझे शोक से भर गयी है
मेरी शालीनता - मेरी जरुरत है
जो अक्सर मुझे नंगा कर गयी है।''[१८]

कविने आर्थिक विषमता के कारण उत्पन्न वर्ग-भेद और जातीभेद जैसी विसंगतियों पर व्यंग्य करते हुए 'मोचीराम' कविता में लिखा है -

''बाबूजी सच कहूँ - मेरी निगाह में
न कोई छोटा है
न कोई बड़ है
मेरे लिए, हर आदमी एक जोड़ी जूता है।''[१९]

घूमिल ने 'पटकथा' 'भाषा की रात' 'जनतंत्र के सूर्योदय में' 'शहर में सूर्यास्त' आदि कविताओं में अवसरवादी चरित्रहीन दलबदल सुविधाभोगी और चुनाव में जनता को झूठे आश्वासन देनेवाले नेताओं पर तीखे व्यंग्य कसे है। 'भाषा की रात' में सुविधाभोगी नेताओं पर व्यंग्य है -

सुविधापरस्त लोगों के
ऊसर दिमाग में
थूहर की तरह उगी हुई राजनीति
शब्दों से बाहर का व्याकरण है।''[२०]

स्व.घूमिल की कविताओं में राजनीतिक व्यंग्य सर्वोपरी है। सुनहरे भारत का सपना देखने वाले देशभक्तों ने अपना खुन बहाकर परतंत्र भारत को मुक्त कराया। लेकिन आजादी के बाद चरित्रहीन, भ्रष्ट और धनलोलूप नेताओं ने औरतों के तन से लिपटकर जनतंत्र को एक चमकदार गोल शब्द बना दिया। आज जनतंत्र इन भूखे भेड़ियों की जुबान पर ही जीवित है, जिसको रोज हत्या होती है -

प्रत्येक राष्ट्र की सही ताकात उस देश की युवापीढ़ि होती है, परंतु देश की बेकारी ने आधी उम्र में ही युवानों को कंकाल बना दिया है। रोजगार के दफ्तर नौकरी देने में तो असमर्थ है, पर आत्महत्या करने में सहायभूत है। देश की गलत व्यवस्था ने आर्थिक-विषमता और बेरोजगारी को जन्म दिया, जिससे स्वातंत्र्योत्तर युवापीढ़ि कमजोर और पंगु हो गई है। उसमें राष्ट्रीय भावना का अभाव है। युवापीढ़ि को पंगु बना देने वाले भ्रष्टाचारियों पर किए गए व्यग्य 'पतझड' कविता में व्यक्त हुए है।[२१]

''मैंने राजगार दफ्तर में गुजरते हुए -
नौजवानों को
यह साफ-साफ कहते सुना है -
इस देश की मिट्टी में
अपने जाँगर का सुख तलाशना
अन्धी लड़की की आँखों में

उससे सहवास को सुख तलाशना है।''[२२]

स्व.घूमिल हिन्दी साहित्य के एक सशक्त व्यंग्यकार कवि है। उनके व्यंग्य की सर्वोत्तम विशेषता है - गहन सच्चाई। किसी भी युग में अनावृत्त सत्य एक कटु व्यंग्य के रुप में प्रकट हुए है।

❊ संदर्भ सूचि :

(१) संस्कृत - हिन्दी शब्दकोश, ले.वामन शिवराम आप्टे, पृ.१८३
(२) नालंदा विशाल शब्द सागर, प्र.आदिश बुक डिपो, पृ.१३०८
(३) समकालीन हिन्दी व्यंग्य : उपलब्धियों के नये आयाम, ले.डॉ.भगवानदास एन. कहार, पृ.१२
(४) कबीर, हजारीप्रसाद द्विवेदी, पृ.१६४
(५) मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ : भूमिका, ले.लतीफ धोधी
(६) मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ : भूमिका, ले.हरिशंकर परसाई
(७) हास्य एवं व्यंग्य : दो भिन्न अवधारणाएँ, मधमती अंक, अगस्त-२००७
(८) कल सुनना मुझे : काव्य संग्रह, घूमिल, पृ.३३
(९) संसद से सड़क तक : घूमिल, 'अकाल-दर्शन', पृ.१४
(१०) संसद से सड़क तक : घूमिल, 'पटकथा', पृ.११३
(११) संसद से सड़क तक : घूमिल, 'बीससाल बाद', पृ.९
(१२) संसद से सड़क तक : घूमिल, अकाल दर्शन, पृ.१४
(१३) संसद से सड़क तक : घूमिल, प्रौढ़-शिक्षा, पृ.४६
(१४) संसद से सड़क तक : घूमिल, प्रौढ़-शिक्षा, पृ.४५
(१५) संसद से सड़क तक : घूमिल, 'पटकथा', पृ.११९
(१६) संसद से सड़क तक : घूमिल, 'पटकथा', पृ.१२६
(१७) संसद से सड़क तक : घूमिल, 'मोचीराम', पृ.३९
(१८) संसद से सड़क तक : घूमिल, 'एकान्तकथा', पृ.२१
(१९) संसद से सड़क तक : घूमिल, 'मोचीराम', पृ.१९
(२०) संसद से सड़क तक : घूमिल, 'भाषा की रात', पृ.९७
(२१) संसद से सड़क तक : घूमिल, 'शहर में सूर्यास्त', पृ.४३
(२२) संसद से सड़क तक : घूमिल, 'पतझड', पृ.६०

डॉ.भरत आर. बोदर
अध्यक्ष हिन्दी विभाग, नवजीवन आर्टस एन्ड कोमर्स कोलेज, दाहोद (गुजरात)

LBP PUBLICATION